2 मार्च 2023 कुल पृष्ठ : 8 मूल्य :2/-

मार्च (प्रथम) वर्ष : 45 अंक : 23

जैन पथप्रदर्शक

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

आर. एन. आई. 31109/77
JaipurCity / 224 / 2021-23

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल
सह-सम्पादक : पीयूष जैन

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

जैन पथप्रदर्शक के सम्पादक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा नहीं रहे...

जिनधर्म की प्रभावना में अपना उल्लेखनीय योगदान देने वाले, जैनदर्शन के विशेषज्ञ विद्वान, हजारों साधार्मियों को प्रतिदिन अपने प्रवचनों के माध्यम से धर्मामृत का पान करवाने वाले, ओजस्वी वक्तृत्व शैली के धनी, लोकप्रिय प्रवचनकार, वात्सल्यमूर्ति, सरल परिणामी, मृदुभाषी, अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त युवा विद्वान अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर का दिनांक 17 फरवरी 2023 को असामायिक निधन हो गया।

आप कालचक्र नामक पुस्तक के लेखक, जैन जगत की 13 पुस्तकों के संपादक, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित **जैन पथप्रदर्शक** पाक्षिक पत्र के सम्पादक, **वीतराग-विज्ञान** आध्यात्मिक पत्रिका के सह-संपादक, अर्हं पाठशाला के निर्देशक एवं श्री टोडरमल दिगंबर जैन सिद्धांत महाविद्यालय में क्रमबद्धपर्याय एवं नयचक्र जैसे जटिल विषयों का अध्यापन कराने वाले यशस्वी अध्यापक थे।

2011 से प्रतिवर्ष लगभग 2 महीने विदेशों में जैनधर्म के प्रचार-प्रसार हेतु जाते हुए सन 2023 तक 17 विदेश यात्राओं में अमेरिका, कनाडा, इंग्लैण्ड, अफ्रीका, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया, दुबई आदि अनेक देशों के लगभग 40-50 शहरों में धर्मध्वजा फहराने वाले अंतरराष्ट्रीय विद्वान डॉ. गोधाजी का वियोग देश-विदेश के सम्पूर्ण जैन जगत के लिए वैराग्य का प्रसंग है।

उपाधियाँ एवं अलंकरण

पण्डितप्रवर टोडरमल पुरस्कार,
युवा विद्वतरत्न,
आदर्श जैन युवा राष्ट्रीय सम्मान,
अति विशिष्ट सेवा अवार्ड,
अध्यात्मचक्रवर्ती,
अध्यात्मवेत्ता,
उपाध्यायकल्प,
आचार्य समन्तभद्र पुरस्कार,
युवा जैन रत्न सम्मान,
अर्हत्वचन

सम्पादक की कलम से ....

क्या कहा, सूरज ढल गया?

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

अपने नियत समय पर संध्याकाल में सूरज का ढलना सभी को सहज ही स्वीकृत होता है। हो सकता है ऐसा होना भी कभी किसी को व्यथित करदे, पर यह किसी को आहत नहीं करता है, पर भर दोपहरी सूरज का ढल जाना भला कौन स्वीकार कर सकता है? यह स्वाभाविक ही है कि ऐसी घटना जनजीवन को झकझोर कर रख दे। बस ऐसा ही कुछ संजीवजी के अवसान के कारण हुआ।

हम सभी यह बात बड़ी अच्छी तरह जानते और समझते हैं कि असमय ही कुछ समय के लिए छुप गया सूरज तो कुछ काल बाद पुन: प्रकट होजाता है. संध्याकाल में अपने नियत समय पर डूबा सूरज भी प्रात:काल फिर उग आता है और इसलिए हमें सूरज का डूबना और उग जाना दोनों सहज ही स्वीकृत हैं। पर सब जानते हैं संजीवजी अब सूरज की तरह पुन: लौटकर नहीं आएंगे, बस इसीलिये सब व्यथित हैं।

लगता है मानो उन्हें अहसास था कि उन्हें जल्दी ही जाना है, इसीलिये तो वे कमसे कम समय में अधिक से अधिक कर लेना चाहते थे। कहीं ऐसा तो नहीं था न कि समाज को भी ऐसा ही अहसास रहा हो, इसीलिये समाज भी तो उनके प्रति पूरी तरह समर्पित होगई; पंथ और संप्रदाय के भेद को भूलकर। मान-सम्मान और प्रतिदिन नई-नई उपाधियाँ। कदाचित संजीवजी के साथ यह संयोग भी दुर्लभ ही था, अन्यथा सामान्यत: देश और समाज के लिए काम करने वाले लोगों के अव्यक्त चित्त में निरंतर यही अहसास पला करता है कि लोगों के मन में उनके कार्य, त्याग और समर्पण की कोई कीमत नहीं है।

एक बार फिर मैं इसका श्रेय मात्र उनके भाग्य और पुण्योदय को ही न देकर उनकी निष्ठा, मन की पवित्रता, निरीह वृत्ति और मात्र तत्वप्रचार के पवित्र उद्देश्य को देना चाहता हूँ, जिसने उन्हें अजातशत्रु और सर्वप्रिय बना दिया था।

मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित यह मूल तत्त्वज्ञान संजीवजी के माध्यम से समाज के उस वर्ग तक भी पहुँचा है, जिसे पूज्य गुरुदेवश्री का परिचय नहीं था या जो लोग बुद्धिपूर्वक पूज्य गुरुदेवश्री के प्रतिपादन से सुरक्षित दूरी बनाये रखना चाहते थे। संजीवजी ने न तो अपनी पहिचान छुपाई और न ही उसका ढिंढोरा पीटा, पर जब लोगों को माल (तत्त्वज्ञान) पसंद आता है तो वे उसके मूल श्रोत को भी खोज ही लेते हैं।

संजीवजी की सर्वस्वीकार्यता का एक बहुत बड़ा कारण यह भी रहा कि यद्यपि वे सच्चे आत्मार्थी थे और जैन अध्यात्म में वर्णित भगवान आत्मा का स्वरूप उनका अत्यंत प्रिय विषय था; तथापि उनका स्वाध्याय और प्रतिपादन व्यापक था। जैनआगम के चारों अनुयोगों में उनकी समान रूप से पैठ थी। इसका श्रेय जाता है उनके पूर्णकालिक स्वाध्यायी होने को।

सामन्यजन के विपरीत स्वाध्याय उनके लिए अंतिम नहीं वरन प्रथम प्राथमिकता थी। इसलिए उनके पास इतना पर्याप्त समय और अवसर था कि वे सभी उपलब्ध ग्रंथों का स्वाध्याय कर पाते।

जिन्हें मात्र औपचारिकता ही पूरी करनी है उनकी तो कोई बात नहीं, पर जिनका मन संसार से उचट गया है और जो शीघ्र ही अपने भव का अभाव करने के लिए तत्पर हैं, उनके लिए तो यही आदर्श स्थिति है कि जीवन निर्वाह की अपनी आवश्यकताओं को सीमित करके उनकी पूर्ति के साधन जुटाना अपनी पार्टटाइम एक्टिविटी बनालें और पूर्णकालिक स्वाध्यायी बन जाएँ।

संजीवजी एक लक्ष्यकेन्द्रित व्यक्तित्व थे। उनकी दृष्टि मात्र अपने मूल उद्देश्य तक सीमित रही। वे कहीं अटके नहीं, वे कभी भटके नहीं।

प्रतिकूलताएँ, बाधाएँ या मतभेद किसके मार्ग में आड़े नहीं आते? पर वे उन सब में उलझे नहीं, उन्होंने उन सबको नजअंदाज किया और अपने पथ पर आगे बढ़ते रहे। मैं मानता हूँ कि यह सब उन्हें बुद्धिपूर्वक करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी; क्योंकि यही उनकी सहज वृत्ति थी।

हम सब वे लोग जो स्वयं आत्मार्थी हैं और तत्वप्रचार की भावना रखते हैं उनके लिए संजीवजी के व्यक्तित्व के ये विरले गुण अपने व्यक्तित्व में समाहित करने का उपक्रम करना ही चाहिए।

संजीवजी का इस तरह अनायास ही चले जाना, हम जैसे उन सभी लोगों के लिए एक चेतावनी है जो यह सोचकर सांसारिक प्रपंचों में डूबे हुए हैं कि अभी तो बहुत समय है, फिर कभी कर लेंगे. संजीवजी के वियोग की इतनी बड़ी कीमत चुकाकर भी अगर हम न चेत पाए तो.....।

उनका शीघ्र कल्याण हो यही कामना है।

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें – www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें – www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र – श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

एक गुरू के हृदय से ....

प्रतिभाशाली विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा

– डॉ. हुकमचन्दजी भरिल्ल

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जैनदर्शन के प्रभावशाली विद्वान थे। जैन-अध्यात्म पर उनकी गहरी पकड़ थी। आध्यात्मिक पत्रिका वीतराग विज्ञान के वे सह-सम्पादक थे। जबसे वे वीतराग विज्ञान के सह-सम्पादक बने थे, तभी से वे वीतराग विज्ञान पर गहरी पकड़ रखते थे। गुरुदेवश्री के प्रवचन जो वीतराग विज्ञान में जाते हैं, वे समय के पहले उनका चयन कर, उसे व्यवस्थित कर लेते थे। अंक जब मेरे पास आता था, तब एक प्रकार से तैयार ही रहता था; पर उसे मैं एक बार आदि से अंत तक अक्षरश: पढ़ अवश्य लेता था, उसमें बहुत कम करेक्शन रहते थे।

आज मैं अपने को उनके बिना असहाय अनुभव कर रहा हूँ।

अभी कुछ दिनों से मेरा प्रवचनार्थ बाहर जाना बहुत कम हो गया है। उस कमी की पूर्ति उन्होंने अपने प्रवचनों के माध्यम से कर दी थी। अपने प्रवचनों के माध्यम से उन्होंने देश-विदेश में धूम मचा रखी थी; पर एकदम अचानक वे अल्पवय में ही हम सबको छोड़कर चले गये।

अपने स्वर्गवास से एक माह पहले तक वे जिनवाणी के प्रचार प्रसार में अत्यन्त सक्रिय थे। लगभग 4 महीने से अपने घर भी नहीं आए थे, जिनको उन्होंने आश्वासन दे रखे थे; **वे आज अपने को अनाथ अनुभव कर रहे हैं।**

उन्होंने अपने सबल कंधों पर वीतराग विज्ञान और जैन पथप्रदर्शक दोनों पत्र संभाल रखे थे और हमारे महाविद्यालय में परमभावप्रकाशक नयचक्र और क्रमबद्धपर्याय जैसे जटिल विषयों का अध्यापन संभाल रखा था। हमारी समझ में नहीं आ रहा है कि यह सब काम अब किसके कंधों पर सौपें। **उनके चले जाने से आज मैं अपने को बहुत अकेला अनुभव कर रहा हूँ।**

अभी-अभी मैं जिस तत्त्व का प्रतिपादन कर रहा था; उस पर उनकी पूरी पकड़ और श्रद्धा थी और अपने आत्मा के कल्याण में उन्होंने उसका पूरी तरह उपयोग किया।

उन्होंने अपने अन्तिम समय में स्वयं को संभाल लिया और सारे जगत से उपयोग हटाकर आत्मा में लगा लिया था। इसमें उनकी धर्मशील धर्मपत्नी का भरपूर सहयोग था और डॉ. अशीष मेहता का मार्गदर्शन और पूरी सेवा अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई। उनका पुत्र आर्जव हमारे महाविद्यालय में पढ़ रहा है, प्रतिभाशाली छात्र है। वह निश्चित रूप से उन्हीं जैसा ठोस विद्वान बनेगा और उसकी परिणति भी उनके समान होगी। आज भी उसकी परिणति अत्यन्त निर्मल है।

उनकी समाधि को देखकर सभी मुमुक्षु भाईयों को अपने भव का सुधार कर लेना चाहिये। उनके परिणामों के अवलोकन से मुझे अत्यन्त स्पष्ट प्रतिभाषित होता है कि उनके संसार समुद्र का किनारा अत्यन्त नज़दीक है। लगता है वे दो-तीन भव में ही भव मुक्त होंगे।

वे देह छोडकर अत्यन्त उत्कृष्ट संयोगों में गये हैं; उनके अन्त समय के निर्मल परिणामों से उनके वर्तमान संयोगी भावों का अनुमान होता है। मैं उनके शीघ्र कल्याण की कामना करता हूँ। ●

सह-सम्पादक की कलम से....

क्या भूलें क्या याद करें?

– पीयूष जैन

मेरे अभिन्न मित्र और साथी संजीवजी के लिए आज श्रद्धांजलि लिखनी पड़ रही है। यह कल्पना भी तकलीफ दे रही है।

सच बात तो यह है कि लगभग 25 साल के साथ की इतनी सारी स्मृतियाँ जेहन में आ रही है कि समझ नहीं आता, **क्या भूलें क्या याद करें?**

लोग पूछते हैं - 'संजीवजी क्या थे? **एक अच्छे वक्ता, विचारक, सुधारक, उपदेशक, अध्ययेता, आत्मार्थी, मित्र?**' लिस्ट लम्बी हो जायेगी। मैं कहता हूँ - **वे क्या नहीं थे? वे सबकुछ थे।** उनमें वो सबकुछ था, जो एक सच्चे आत्मार्थी या एक महापुरुष में होना चाहिए।

कोविड, जो हर किसी के लिए काल बनकर आया था, वही संजीवजी के लिए वरदान बन गया। इस कोविड में संजीवजी ने जो किया, उससे उनकी कीर्ति अमर हो गई। उन्होंनें ऑनलाइन माध्यम से तत्त्वज्ञान की ऐसी अविरल धारा बहाई, जिसमें **क्या बालक, क्या बूढ़े, क्या मुमुक्षु और क्या गैर-मुमुक्षु, क्या जैन क्या अजैन,** सारे बन्धन तोड़कर सबने भरपूर लाभ लिया।

भय, निराशा, हताशा के इस गहरे वातावरण में संजीवजी की वाणी **आशा का सूरज बनकर सबको रोशन करने लगी।**

कोविड की बंदिशों के खत्म होते ही देश-विदेश में उनके तूफानी दौरों का एक दौर चला, जिससे वातावरण में तत्त्वज्ञान की एक अलग महक बिखरनी शुरू हो गई।

पर यह क्या? सूरज अभी चढ़ा ही नहीं था कि अचानक अस्त हो गया। लोग अभी तो तत्त्वज्ञान से जुड़ना-सीखना शुरू कर ही रहे थे कि सिखाने वाला ही चला गया। **वज्रपात हुआ, शून्यता उत्पन्न हो गई जैन जगत में... अब हम क्या करें?**

हम समय की अनित्यता का विचार जो हमारे दिमाग में है, उसे दिल से स्वीकार करें। अपने हित-अहित का निर्णय कर शीघ्र उस पथ पर लगें **तो हमने उनके जीवन से भी सीखा और मरण से भी** नहीं तो यह अरण्य रुदन ही रहा।

यह समय कुछ निर्णय कर उस पर चलने पडने का है बस!

हम ऐसा करें, इसी भावना के साथ.... ●

देश-विदेश से श्रद्धांजलि देने पहुँचा विद्वत् व श्रेष्ठी वर्ग

तीये की बैठक (शोक सभा) : दिनांक 19 फरवरी 2023 रविवार को प्रातःकाल डॉ. संजीवकुमारजी गोधा की स्मृति में शोक सभा उनकी कर्म-स्थली ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में रखी गई, जिसमें सर्वश्री महेन्द्रकुमारजी गोधा(पिता), आर्जव गोधा(पुत्र), सुभाषजी, प्रमोदजी, राजेशजी, ललितजी(भ्राता), प्रदीपजी चौधरी(ससुर), अरिहंतजी, तिलकजी(साले), परिवारजन और सर्वश्री डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, बिपिन जैन मुम्बई सहित स्मारक के सभी कार्यकर्त्तागण स्वयं को उनके परिवार का सदस्य मानते हुए सफेद टोपी पहनकर बैठक में बैठे थे, इसके अतिरिक्त देश के विभिन्न नगरों से पधारे हुए विद्वान व श्रेष्ठीजन आदि हजारों लोग उन्हें श्रद्धांजलि देने उपस्थित थे।

सभा के प्रारम्भ में डॉ. भारिल्ल द्वारा रचित जिनेन्द्र वन्दना, बारह भावना एवं समाधि का सार का पाठ किया गया, तत्पश्चात् सभी साधर्मीजन दर्शनार्थ पंचतीर्थ जिनालय गये। पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने देश-विदेश की अनेक संस्थाओं, ट्रस्टों, संगठनों, फैडरेशन, मण्डलों, मंदिरों एवं व्यक्तियों द्वारा प्राप्त सैकडों शोक संदेशों का वाचन किया। आपके परिवारजन द्वारा देश की विभिन्न संस्थाओं में 5 लाख रूपये की राशि के दान घोषणा की गई।

श्रद्धांजली सभा : 19 फरवरी को दोपहर में डॉ. संजीवजी गोधा के प्रति श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ, जिसका संचालन पं. बिपिनजी शास्त्री, मुम्बई ने किया।

इस प्रसंग पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री अजितप्रसादजी दिल्ली, श्री आई. एस. जैन मुंबई, श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ़, डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, श्री अशोकजी बड़जात्या इदौर, श्री विजयजी बड़जात्या इंदौर, पं. रजनीभाई हिम्मतनगर, पं. विरागजी जबलपुर, श्री अजितजी बड़ौदा, पं. राजकुमारजी उदयपुर, पं. विपिनजी नागपुर, डॉ. मनीषजी मेरठ, डॉ. जिनेन्द्रजी उदयपुर, श्री शुद्धात्मजी दुबई, श्री अखिलेशजी ज्वाइन्ट कमिश्नर ग्वालियर, पं. अनिलजी खनियांधाना,पं. नितिनजी सूरत, श्री सुनीलजी सर्राफ सागर के अतिरिक्त ऑनलाइन पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, श्री अतुलभाई खारा डलास, श्री राजेशभाई जवेरी सोनगढ़, श्री निमेशभाई शाह मुम्बई, श्री बसंतभाई दोषी मुम्बई, श्री विपुलभाई मोटाणी मुम्बई, श्री अशोकजी पाटनी सिंगापुर, श्री अक्षयभाई दोषी मुम्बई आदि ने अपने उद्गार व्यक्त कर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किये।

श्रद्धांजलि सभा में उद्गार व्यक्त करते हुये महानुभाव...

श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जयपुर ने कहा कि संजीव ने कोरोना के समय 3-3 प्रवचन करके तो सिखाया ही मरने के बाद भी सिखा गया। उसे जो जीवन में करना था, वह तो उसने कर लिया। यदि हम आज भी कुछ नहीं सीख पाए तो हमें अपने मनुष्य भव पर, हमारी जिंदगी पर, हमारे तत्त्वज्ञान पर लानत है।

श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा ने कहा कि संजीवजी के चले जाने से मुझे ऐसा लग रहा है मानो मेरा एक हाथ ही चला गया हो। उन्होंने अपनी तेजस्वी वाणी से संपूर्ण जैन समाज को जो ज्ञानदान दिया है, उसके फल में वे अवश्य ही केवलज्ञान प्राप्त करेंगे।

श्री अजितप्रसादजी, दिल्ली ने कहा कि वह तो ज्ञान के सूर्य थे और जिसप्रकार सूर्य कभी अंधकारमय नहीं होता कहीं ना कहीं अपना प्रकाश जरूर बिखेरता है उसीप्रकार वे जहाँ भी गये हैं वहाँ अपने ज्ञान का प्रकाश बिखेर रहे होंगे।

श्री प्रदीपजी चौधरी, किशनगढ़ ने कहा कि वे किशनगढ़ कभी जमाई बनकर नहीं आए। हमेशा एक विद्वान बनकर ही आए। कहीं घूमने नहीं जाते थे, दोनों समय प्रवचन करते और दिनभर तत्त्वचर्चा। किशनगढ़ का समाज भी उन्हें विद्वान के रूप में ही देखता था, उनके प्रवचन सुनने बड़ी संख्या में आता था।

पण्डित रजनीभाई दोषी, हिम्मतनगर ने कहा कि गुरुदेवश्री के 9,000 प्रवचनों में से कम से कम 1,000 प्रवचनों में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का नाम आता है गुरुदेवश्री उनके लिए 3 वाक्य बोलते हैं। **नानी उमर छे, क्षयोपशम घणो छे, प्रभावना घणीं करे छे** यदि संजीवजी उस समय होते तो गुरुदेवश्री संजीव के लिए भी यही तीन वाक्य कहते...

श्री अशोकजी बडजात्या, इन्दौर ने कहा कि मेरी दृष्टि में जैन दर्शन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले इस विश्व में तीन व्यक्ति हैं पहले गुरुदेवश्री कानजीस्वामी, दूसरे डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल और तीसरे डॉ. संजीवकुमारजी गोधा...

पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, उदयपुर ने कहा कि संजीवजी ने सम्यक प्रकार से जीवन जीना-मरना सिखाया, सम्यक प्रकार से जीवन जिया और सम्यक प्रकार से ही मरण किया और अपने **संजीव** नाम को सार्थक किया।

डॉ. मनीषजी शास्त्री, मेरठ ने कहा कि माता-पिता भाई के वियोग से क्या पीड़ा होती है इसके तो हम सभी अभ्यस्त हैं; परन्तु जिनवाणी के बहुत बड़े प्रचारक का वियोग क्या होता है यह जीवन में पहली बार पता चला। धर्म की शरण ही सच्ची शरण है अत: आप सभी परिवारजन धर्म की शरण में रहें तो ही शान्ति-समता रहेगी।

श्री आई. एस. जैन, मुम्बई ने कहा कि संजीवजी जब मेरे घर 1 महीने रहे तब उन्होंने कभी-भी अपनी बीमारी का दुख प्रकट नहीं किया; क्योंकि उन्होंने कर्म के उदय से स्वयं को जोड़ा ही नहीं। वे तो स्वयं को क्षयोपशम ज्ञान से भी भिन्न देख रहे थे।

श्री अजितजी जैन, बड़ौदा ने कहा कि आज का दिवस शोक का नहीं है; अपितु संजीवजी ने अपने पूरे जीवनभर हमें जो तत्त्वज्ञान सिखाया है, हम उसी तत्त्वज्ञान को और आगे बढ़ाएंगे - ऐसी प्रेरणा लेने का यह दिन है।

हार्दिक स्वागत...

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर 2019 से **जैन पथप्रदर्शक (पाक्षिक पत्रिका)** के सम्पादक व इससे पूर्व 2002 से सह-सम्पादक एवं 1998 से **वीतराग-विज्ञान (आध्यात्मिक मासिक)** के सह-सम्पादक पद का कार्यभार सम्भाल रहे थे।

उनके चिर-वियोग के पश्चात् वीतराग-विज्ञान के सह-सम्पादक के स्थान पर **पण्डित अरुणजी शास्त्री बंड** को एवं जैन पथप्रदर्शक के सम्पादक के स्थान पर **श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल** को (जो कि पूर्व में सह-सम्पादक थे) व सह-सम्पादक के स्थान पर **पण्डित पीयूषजी शास्त्री** को नियुक्त किया गया।

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा को समर्पित ...

प्रभावना विशेषांक

जैन पथप्रदर्शक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा की स्मृति में 02 अप्रैल 2023 का अंक **प्रभावना विशेषांक** के रूप में प्रकाशित करने जा रहा है।

जिनधर्म की प्रभावना में सम्पूर्ण जीवन समर्पित करने वाले हम सभी के प्रिय अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के सम्बन्ध में हर व्यक्ति अपने हृदय में कुछ मधुर स्मृतियाँ, घटनायें, प्रसंग संजोए हुए है। **आप सभी अपने विचारों-अनुभवों एवं महत्त्वपूर्व प्रंसगों के दुर्लभ चित्र हमें शीघ्र ही भेजें।**

अखिल शास्त्री - 7412078704

veetragvigyanjppgmail.com

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा की नवीनतम कृति...

समुद्घात का विमोचन

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा की नवीनतम कृति **समुद्घात** का 1 मार्च 2023 को आयोजित सहज शान्ति विधान के अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के करकमलों से विमोचन किया गया।

इस कृति में सात प्रकार के समुद्घातों का अत्यन्त सरल शैली में गहराई से स्पष्टीकरण किया गया है। जैनदर्शन के महत्त्वपूर्ण लेकिन अचर्चित विषय पर लिखी गई यह कृति जैनदर्शन के सभी पाठकों को उपयोगी सिद्ध होगी।

यह कृति श्रीमती संस्कृति धर्मपत्नी संजीवकुमारजी गोधा की ओर से स्वाध्यायार्थ नि:शुल्क भेजी जा रही है। पुस्तक मंगाने हेतु पिनकोड एवं मोबाईल नम्बर सहित पूरा पता साहित्य विभाग के नम्बर 7412078703 पर WhatsApp करें।

अपने किए का हर्ष बहुत था...

- अखिल शास्त्री, मंडीदीप

मेरे गुरु, मेरे प्रेरणास्त्रोत, मेरे भाईसाहब, मेरे मित्र अब नहीं रहे, यह एक अस्वीकृत अहसास; क्योंकि वे आज भी जीवित है मेरे दिलो-दिमाग में, मेरे अहसास में...।

ये सारे के सारे रिश्ते आज भी हुबहू वैसे ही हैं, जैसे 2 महीने पहले थे; क्योंकि आज भी मेरे पास उनका दिया ज्ञान, अनुशासन, कार्यशैली, आशीर्वाद, वात्सल्य और हास्य है; बस **इन्हीं से तो ये सभी रिश्ते थे और ये सब तो आज भी हुबहू हैं।**

यद्यपि मेरा उनके साथ कार्यकाल अधिक समय का नहीं था, पर घनिष्ठ अवश्य था। डेढ़ साल का जो समय मैंने उनकी छत्र-छाया में व्यतीत किया, वह अब-तक के मेरे जीवन का सबसे सुखद अनुभव रहा। वे असीम परिश्रम और लगन के साथ बिना थके, बिना रूके, तत्त्वज्ञान की प्रभावना में लगे थे और लोग भी उन पर असीम सम्मान-स्नेह लुटा रहे थे। उन्होंने जो किया, उन्हें जो मिला वह सब असीम...असीम...असीम...था और अब यह दूरी भी असीम।

मैं कह सकता हूँ कि मैं संजीवजी के जीवन के स्वर्णकाल का साथी रहा हूँ। साथ ही उन चुनिंदा लोगों में से हूँ, जिनसे संजीवजी ने कार्यवश सबसे ज्यादा बात की होगी। जब सभी लोगों के नम्बर खत्म हो जाते थे और रात्रि के 10-11 बज रहे होते थे और लोगो को लगता था कि दिन-भर के थके-हारे संजीवजी आराम कर रहे होंगे; लेकिन तब चालू होता था हमारी वीतराग विज्ञान एवं जैन पथप्रदर्शक पत्रिका के सम्पादन का कार्य....और दो-तीन घंटे की लम्बी बातचीत के बाद....आखों में भरी नींद के साथ वो पत्रिका तैयार होती थी।

कहना यह है कि वे साल के 365 दिन, 24/7 निरन्तर तत्त्वप्रचार के कार्य में ही तल्लीन थे। इतनी सारी यात्रायें, इतने सारे कार्यक्रम, इतने सारे उद्बोधन, इतनी सारी मीटिंग, घर-गृहस्थी के कार्य भी उतने ही, जितने हम सभी को होते हैं या उससे भी अधिक। और बातचीत के दौरान उससे सम्बन्धित बातें भी होती थी, पर कभी उनके मुँह से यह नहीं सुना कि बस! अब बहुत हो गया, परेशान हो गया, थक गया, मैं अकेला कितना ही करूँ आदि आदि - बस एक यही नारा कि अभी तो शुरुआत है, जीवनभर यही तो करना है।

वे कभी थके नहीं, कभी रूके नहीं; क्योंकि **धर्म को वे छोड़ना चाहते नहीं थे और धर्म रहित काम उन्होंने हाथ में लिए नहीं,** इसलिए वे हर कार्य को अति उत्साह के साथ करते जाते थे यही बजह है कि मैंने सदैव उन्हें अपने किए पर हर्षित होते ही देखा है।

वे एक जीवंतसंस्था थे। जितना प्रचार कोई एक संस्था कर सकती है उससे ज्यादा तो उन्होंने अकेले ही कर दिखाया।

उन्हें अपने किए का हर्ष बहुत था, दुनिया को उनके किए का हर्ष बहुत है और मुझे उनके साथ किए का हर्ष हमेशा रहेगा। ●

डॉ. गोधा के वियोग में सारे देश में दु:ख की लहर, गाँव–गाँव में श्रद्धांजलि सभायें

अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा को सम्पूर्ण भारतवर्ष अपने श्रद्धासुमन आर्पित कर रहा है, जिसमें तीर्थधाम मंगलायतन, शिवाजी मंदिर दादर मुंबई, श्री महावीर जिनालय सागर, श्री दिगंबर जैन मुमुक्षु मंडल कोलकाता, महावीर ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल कारंजा, श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर विश्वास नगर दिल्ली, संस्कारतीर्थ शाश्वतधाम उदयपुर, मुमुक्षु मंडल नवरंगपुरा अहमदाबाद, तीर्थधाम ज्ञानोदय भोपाल, श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर उदयपुर, श्री दिगंबर जैन मुमुक्षु मंडल कोटा, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई, जैन पाठशाला समिति एवं स्वाध्याय मंडल जयपुर, श्री दिगंबर जैन मंदिर कोहेफिजा भोपाल, श्री महावीर स्वामी समवशरण मंदिर भोपाल, श्री त्रिभुवन तिलक सीमंधर जिनालय ग्वालियर, चैतन्यधाम अहमदाबाद, श्री 1008 आदिनाथ जिनालय छिंदवाड़ा, श्री समयसार विद्या निकेतन ग्वालियर, श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर हिंगोली, श्री वीतराग विज्ञान भवन इतवारी नागपुर, सकल दिगंबर जैन समाज पिड़ावा, दिगंबर जैन मुमुक्षु मंडल औरंगाबाद, श्री भगवान महावीर कुंदकुंद कहान दिगंबर जैन ट्रस्ट दमोह, श्री आदिनाथ जिनालय कोलारस, जैन युवक मंडल बेलगांव कर्नाटक, श्री नंदीश्वर जिनालय खनियांधाना, श्री महावीर जिनालय किशनगढ़, श्री सीमंधर जैन मन्दिर टीकमगढ़, श्री 1008 दिगम्बर जैन मंदिर दलपतपुर, श्री दिगंबर जैन महावीर परमागम मंदिर भिंड, श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर फिरोजाबाद, श्री दिगंबर जैन मंदिर नोगामा, सकल दिगम्बर जैन समाज ग्वालियर इत्यादि स्थानों पर श्रद्धांजलि सभाओं का आयोजन किया जा चुका है एवं अनेकों जगह किया जाएगा।

समग्र मम्बई जैन समाज ने की अध्यात्मवेत्ता को श्रद्धांजलि समर्पित

मुंबई : दिनाँक 25 फरवरी 2023 को प्रातः 10:00 श्री शिवाजी मंदिर ऑडिटोरियम में अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के आसामायिक देहपरिवर्तन पर भावपूर्ण आदरांजलि सभा रखी गई। जिसमें हजारों साधर्मी श्रद्धांजलि देने हेतु उपस्थित हुए।

यह सभा श्री कुंदकुंद कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, श्री दिगम्बर जैन मुमुक्ष मंडल जवेरी बाजार, श्री सीमंधर स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर विले पार्ले, श्री कुंदकुंद कहान जैन तत्व प्रचार समिति दादर, श्री दादर दिगम्बर जैन मुमुक्ष मंडल, पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली, श्री कुंदकुंद कहान मुमुक्ष मंडल दहिसर, श्री कहान दिगम्बर जैन उत्कर्ष मुमुक्ष मण्डल मलाड़, श्री महावीर स्वामी कुंद-कुंद कहान दिगम्बर जैन मुमुक्ष ट्रस्ट सदिच्छा मंदिर बोरीवली, श्री महावीर स्वामी पंच बालयति दिगम्बर जैन मंदिर भट्टवाड़ी घाटकोपर, श्री अनन्तनाथ कुंदकुंद कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट - वाशी, श्री कुंदकुंद कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु ट्रस्ट वसई रोड़, श्री 1008 महावीर दिगम्बर जैन चैत्यालय एवरशाइन नगर मलाड़, श्री कुंदकुंद कहान दिगंबर जैन मुमुक्षु भवन समाज भाईंदर, चैतन्यधाम अहमदाबाद आदि मुम्बई महानगर की सभी संस्थाओं के संयोजकत्व में संपन्न हुई।

2 मार्च 2023, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य :2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

भावभीनी श्रद्धांजलि

संजीव था जिनका वेष, जाना आतम परमेश
स्वयं में चले गए
जाना आतम परमेश, जाना आतम का भेद।
सिखाकर चले गए
जयपुर में जन्मे थे, उत्साहित रहते थे।
जिनमार्ग पे चलने को, आतुर वह रहते थे।
जिनशासन की महिमा, दिनरात वो गाते थे।
कहाँ तुम चले गए
अध्यात्म सिखाते थे, आतम बतलाते थे।
स्वयं में चले गए
पण्डित टोडरमलजी, आदर्श तुम्हारे थे।
उन जैसा ही जीवन, दृढ़ता से जीते थे।
औजस्वी वाणी थी, तेजस्वी जीवन था।
कहाँ तुम चले गए
संजीव तुम अमर हुए, औरों को अमर करके।
स्वयं में चले गए

– सुबोध जैन, ग्वालियर

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल
सह-सम्पादक : पीयूष जैन
प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 फरवरी 2023

प्रति,